मुंबई विश्वविद्यालय

हिंदी विभाग

द्वारा आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

"छायावाद एक पुनर्पाठ"

दि. 15 एवं 16 मार्च 2019

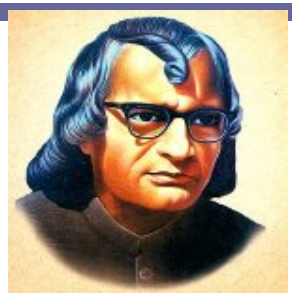

छायावाद आधुनिक हिंदी कविता का सबसे महत्त्वपूर्ण आंदोलन है। इसका शुभारंभ 1918 में पंडित मुकुटधर पाण्डेय द्वारा लिखित काव्यपंक्तियों से होता है। इसे व्यवस्थित रूप देने का श्रेय महाकवि जयशंकर प्रसाद को दिया जाता है। यह आधुनिक काल के सबसे बड़े कवियों का युग है। जिसमें प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी द्वारा लिखित काव्य साहित्य का समावेश किया जाता है। इन कवियों ने गुण और परिमाण दोनों ही दृष्टियों से अतिशय उतकृष्ट और विपुल काव्य साहित्य की सृष्टि की है जिसके आधार पर इस युग को आधुनिक हिंदी कविता का स्वर्णयुग भी कहा जाता है। इस दौर में नवजागरण, स्वाधीनता संग्राम के दबाव में मुक्ति का प्रबल आग्रह प्रशस्त राष्ट्रीयता, प्रकृति और पर्यावरण की चिंता, विश्व संदृष्टि, नए वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रभाव, स्वच्छंद चेतना, क्लासिकी शिल्प तथा कविता के विलक्षण प्रयोगों का वैभव देखने को मिलता है। छायावादी कविता इतनी बहुस्तरीय, कल्पनात्मक छवियों से ओतप्रोत और सम्मोहनकारी है कि आज भी पाठक उसके जादुई प्रभाव से मुक्त नहीं हो सका है। हिंदी के प्राय: सभी बड़े आलोचकों ने छायावाद और उसके कवियों पर लेखनी चलाई है, लेकिन यह दावा करना आज भी सही नहीं होगा कि छायावाद का सही मूल्यांकन हो चुका है।

इस वर्ष छायावाद अपने सौ वर्ष पूर्ण कर रहा है। इस दौरान उसका मूल्यांकन भी नए सिरे से होता रहा है। परंतु अभी भी उसके सही और नए पाठ की आवश्यकता बनी हुई है। यह हिंदी आलोचना पर एक ऋण की तरह है कि वह भक्ति काल के बाद कविता में आए इस सबसे महत्त्वपूर्ण आंदोलन की वस्तुनिष्ठ समीक्षा करे। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर हमारा विभाग छायावाद शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उसके नए पाठ के संधान के लिए दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करने जा रहा है। इस संगोष्ठी में देश-विदेश के सुप्रतिष्ठ साहित्यकार, आलोचक और विद्वान अपने वक्तव्य एवं स्थापनाओं से छायावाद के मूल्यांकन को नया उत्कर्ष प्रदान करेंगे। इस सारस्वत आयोजन में आप सादर आमंत्रित हैं.....

इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में विमर्श के लिए निम्नलिखित विषय सुनिश्चित किए गए हैं। अत: किसी एक विषय पर शोध आलेख आमंत्रित हैं..

शोध आलेख के विषय -

1. छायावाद का स्वरूप
2. छायावादी कवियों द्वारा छायावाद की व्याख्या
3. विविध आलोचकों द्वारा छायावाद की व्याख्या
4. छायावाद के मूल्यांकन के विविध चरण
5.छायावाद के प्रवर्तक कवि पंडित मुकुटधर पाण्डेय
6. महाकवि जयशंकर प्रसाद और छायावाद
7. जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रकृति चित्रण
8. जयशंकर प्रसाद के काव्य मे रहस्य और दर्शन
9. जशंकर प्रसाद के काव्य में विज्ञान
10. जयशंकर प्रसाद के काव्य में सभ्यता समीक्षा
11. जयशंकर प्रसाद के काव्य में नवजागरण की प्रतिध्वनि
12. जयशंकर प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय चेतना
13. जयशंकर प्रसाद की लंबी कविताएँ
14. जयशंकर प्रसाद द्वारा प्रयुक्त काव्य रूप
15. जयशंकर प्रसाद की काव्य भाषा
16. जयशंकर प्रसाद की कविता में शैल्पिक अनुप्रयोग
17. निराला के काव्य में ओज और पौरुष
18. निराला के काव्य में राष्ट्रीय चेतना
19. निराला के काव्य में विद्रोह और क्रांति का स्वर
20. निराला के काव्य में वैचारिक अनुप्रयोग
21. निराला की लंबी कविताएँ
22. निराला के काव्य में प्रणति भाव
23. निराला की काव्यभाषा
24. निराला का काव्य शिल्प और मुक्त छंद
25. सुमित्रानंद पंत और छायावाद
26. प्रकृति के सुकुमार कवि पंत
27. पंत के काव्य में युगजीवन का चित्रण
28. पंत के काव्य में दर्शन और विचार
29. पंत का काव्य शिल्प
30. महादेवी वर्मा और छायावाद
31. महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना और रहस्यानुभूति
32. महादेवी वर्मा के काव्य में नारी विद्रोह का स्वर
33. महादेवी वर्मा का काव्य शिल्प
34.छायावाद के पुनर्पाठ की संभावना
35. छायावादी कविता के पुनर्पाठ के प्रतिमान
36. छायावाद का समग्र मूल्यांकन

विनीत

संयोजक

प्रा. सुनील वळवी

हिंदी विभाग

मुंबई विश्वविद्यालय

भ्रमण ध्वनि- 8879252808

ई-मेल - sunilvalvi8684@gmail.com

अध्यक्ष

डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

मुंबई विश्वविद्यालय

मो. - 9167921043

9869511876

ई-मेल -dr.krupadhyay@gmail.com

राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध आलेख प्रस्तुति के लिए आपको शोध आलेख यूनिकोड-मंगल फाँट और 14 फाँट साइज़ में Word File तथा PDF में ई-मेल chhayavadekpunrpath@gmail.com पर दि. 12 मार्च 2019 तक भेजना होगा। चयनित शोध आलेख हिंदी के अत्यंत प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान से पुस्तक रूप में प्रकाशित किए जाएँगे।

- सूचना -

1.अध्यापकों और शोधार्थियों के लिए पंजीकरण शुल्क आवास सहित रु 1000/- होगा तथा आवास रहित पंजीकरण शुल्क रु 500/- होगा।

2. पंजीकरण शुल्क डी.डी. या संगोष्ठी के पहले दिन नगद जमा कर सकते हैं।

3. डी.डी. द्वारा शुल्क भेजनेवाले प्रतिभागी डी.डी. Finance and Account Officer, University of Mumbai, Mumbai के नाम से निकालकर अध्यक्ष/संयोजक राष्ट्रीय संगोष्ठी, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, रानडे भवन, विद्यानगरी,सांताक्रुज-पूर्व, मुंबई 400098 के पते पर भेजें।

4. प्रतिभागियों को संगोष्ठी में सहभागिता हेतु ऑनलाईन पंजीकरण करना होगा। यह पंजीकरण https://goo.gl/forms/LVxxcHOY0ddDuNZ73 इस लिंक पर जाकर कर सकते हैं। या मुंबई विश्वविद्यालय के वेब पटल से भी पंजीकरण किया जा सकता है।

5. प्रतिभागियों को टी.ए/डी. ए. नहीं दिया जाएगा।